As. Seema Kumari (Asst. Prof.) (Pol. Sc.), RMC, VKSU

BA. I, paper-2 (Comparative government and Politics)

Dali – 25.01.2022.

संविधानवाद का भविष्य

वर्तमान समय में राष्ट्रीय लोकतंत्रात्मक संविधानवाद पूर्ण सुनिश्चित व स्थिर न हो सका है। यद्यपि आज भी संविधानवाद को निरंकुशतावाद एवं सैनिक शासन की चुनौतियों का सामना कर पड़ रहा है फिर भी संविधानवाद काफी लोकप्रिय और संस्थात्मक रूप ले चुका है।

संविधानवाद की समस्याएं व निराकरण

1. अंतर्राष्ट्रीय युद्ध की स्थिति
2. निरंकुशतावाद का प्रभाव
3. राज्य की आर्थिक गतिविधियों का विस्तार
4. बहुमत का बढ़ता दबाव
5. राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय संकट
6. राजनीतिक विकास की समस्या

इन समस्याओं का निराकरण इस प्रकार हो सकता है:-

1. संविधानवाद के मूलभूत मूल्यों व आदर्शों को सार्वभौमिक रूप से अपनाया जाए।
2. राज्य की बढ़ती हुई गतिविधियों को देखते हुए राजनीतिक मूल्यों का सामाजिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक मूल्यों से सामंजस्य स्थापित किया जाना चाहिए।

Scanned with CamScanner

3. राज्य में बहुमत के दबाव को नियंत्रित करना चाहिए तथा अल्पसंख्यकों के अधिकारों एवं सुरक्षा के प्रावधानों को सकारात्मक एवं औचित्यपूर्ण बनाया जाना चाहिए।

4. राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय संकटों का समाधान शांतिपूर्ण एवं सामंजस्यपूर्ण ढंग से किया जाना चाहिए।

5. राजनीतिक विकास के मानकों एवं प्रतिमानों को निर्धारण सकारात्मक ढंग से किया जाना चाहिए।

6. मानवीय मूल्यों की रक्षा का प्रयास किया जाना चाहिए। जिससे कि संविधान तथा संविधानवाद के प्रति आम व्यक्ति की भावनाएं एवं आकांक्षाएं जुड़ सकें।

संविधानवाद एक आधुनिक विचारधारा है जो विधि द्वारा नियंत्रित राजनीतिक व्यवस्था की स्थापना पर बल देती है। स्थापित संविधान के निर्देशों के अनुरूप शासन को संविधानवाद कहते हैं संविधानवाद का अर्थ है यह अनिवार्य रूप से सीमित सरकार तथा शासित तथा शासन के ऊपर नियंत्रण की एक व्यवस्था है निरंकुश शासन के विपरीत नियमानुकूल शासन।

संवि० एक मूल्य समूह अवधारणा है इसका संबंध राष्ट्र के जीवन दर्शन से होता है एक उदारवादी समाज में लोकतंत्र, स्वतंत्रता, समानता, न्याय, भ्रातृत्व, जनकल्याण आदि मूल्य प्रायः समाहित होते हैं यह साध्यमूलक (व्यक्ति की स्वतंत्रता) सहभागी अवधारणा है संविधान का उद्देश्य व्यक्ति की स्वतंत्रता व कल्याण की सिद्धि करना है।

Scanned with CamScanner